श्रीमद्भागवत में भी कहा है कि भक्तियोग के साधन से, विशेषतः महाभागवतों के मुखपद्म से श्रीमद्भागवत अथवा भगवद्गीता को सुनने से हृदय के शुद्ध हो जाने पर ही श्रीकृष्ण का तत्त्व जाना जा सकता है। **एवं प्रसन्नमनसो भगवद्भक्तियोगतः।** जब हृदय सम्पूर्ण अनर्थों से शुद्ध हो जाता है तो भगवत्-ज्ञान उद्बुद्ध होता है। इस प्रकार भक्ति अथवा कृष्णभावनामृत का पथ **राजविद्या** और **राजगुह्य** है। यह परम विशुद्ध धर्म साधन में बड़ा सुखदायी है। अतएव इस पथ को अवश्य ग्रहण करे।

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि।।३।।

अश्रद्दधानाः=अश्रद्धालु; **पुरुषाः**=व्यक्ति; **धर्मस्य**=धर्मपथ के; **अस्य**=इस; **परंतप**=हे शत्रुमर्दन अर्जुन; **अप्राप्य**=न पाकर; **माम्**=मुझे; **निवर्तन्ते**=भटकते रहते हैं; **मृत्यु**=मृत्युरूप; **संसार वर्त्मनि**=संसाररूपी चक्र में।

अनुवाद

हे शत्रुविजयी अर्जुन! जो इस भक्तियोग के पथ में श्रद्धाहीन हैं, वे मुझे प्राप्त नहीं कर सकते। वे इस मृत्युरूप संसार में ही बारम्बार जन्म-मृत्यु को प्राप्त होते हैं।।३।।

तात्पर्य

अश्रद्धालुओं के लिए यह भक्तिपथ असाध्य है—ऐसा इस श्लोक का तात्पर्य है। श्रद्धा की उद्भावना भक्तसंग से होती है। परन्तु जो अभागे हैं, उनके हृदय में महत्पुरुषों के मुखारविन्द से वेद के सारे प्रमाणों को सुन लेने पर भी श्रीभगवान् में श्रद्धा जागृत नहीं हो पाती। सन्देहशील स्वभाव के कारण वे भक्तियोग में स्थिर नहीं रह सकते। अतः कृष्णभावनामृत में उन्नति करने के लिए श्रद्धा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन है। श्रीचैतन्यचरितामृत में कहा है कि भक्त में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा करने मात्र से उसे सम्पूर्ण संसिद्धिलाभ हो जायगा। इसी का नाम सच्ची श्रद्धा है। श्रीमद्भागवत (३.४.१२) में कथन है कि जैसे वृक्ष के मूल को सींचने से उसकी शाखा-प्रशाखा और पत्तों की अपने-आप तुष्टि हो जाती है और जैसे उदरपूर्ति से सम्पूर्ण इन्द्रियों का संतोष होता है, उसी प्रकार चिन्मयी भगवत्सेवा करने से सब देवता और जीव अपने-आप सन्तुष्ट हो जाते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता को पढ़कर उसके इस निष्कर्ष को तुरन्त धारण कर लेना चाहिए कि अन्य सब कार्यों को त्याग कर भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा करना ही कर्तव्य है। जीवन के इस दर्शन में विश्वास होना ही श्रद्धा है। कृष्णभावना इस श्रद्धा को बढ़ाने की पद्धति है।

कृष्णभावनाभावित मनुष्यों की तीन कोटियाँ हैं। कनिष्ठ श्रेणी में वे हैं, जिनमें श्रद्धा का अभाव है। वे किसी स्वार्थवश दम्भपूर्वक भक्ति करते हैं, इसलिए भक्तियोग की परमसंसिद्धि को प्राप्त नहीं हो सकते। अधिकांश में कुछ समय बाद वे गिर जायेंगे। वे भक्तिमार्ग में लग तो सकते हैं, परन्तु पूर्ण श्रद्धाविश्वास से युक्त न